वार्षिक मूल्य 50 रूपये

# धर्म जीवन

जनवरी 2023


- पावन महोत्सव 2022
- मेरी माँ
- मुझे मेरी माँ मिल गई
- गुरु ने माता पिता दिखा दिए
- बच्चों के व्यक्तित्व का विकास कैसे करें?
- देव स्तोत्र
- देवगुरु आरती
- तालिका वर्ष 2023 ई०

# खुशख़बरी

सम्मान के योग्य धर्म सम्बन्धियो,

आपको यह जानकर ख़ुशी होगी कि हमारे मल्लेका का मन्दिर जो धर्म सम्बन्धियों के सहयोग से बहुत सुन्दर बना हुआ है, उसमें और ज़रूरत अनुसार कमरे आदि बनाने का काम शुरू हो चुका है। उसका नींव का पत्थर 24 दिसम्बर को श्रीमान मेहर सिंह जी द्वारा रखवाया गया। शोक कि श्रीमान मेहर सिंहजी की सेहत ठीक नहीं, परन्तु इस मन्दिर को सुन्दर रूप देने में उनका बहुत बड़ा हाथ है। लोकल सेवक उनके लिए सम्मान रखते हैं, इस अवसर पर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और गौतम जी भी पहुँच गए थे। लोकल धर्म सम्बन्धी काफी गिनती में शामिल हुए। बिल्डिंग का काम बहुत जोर शोर से चल रहा है। सुखदेव जी जोसन और जसविन्द्र सिंह जी रात 2 बजे तक स्वयं मज़दूरों के साथ लगे हुए हैं, और धर्म सम्बन्धी भी सहायता कर रहे हैं। जबसे सत्य धर्म बोध उत्सव वहां पर हुआ है, सब सेवकों में बहुत उत्साह है। हम सब धर्म सम्बन्धियों को जो वहां सहायक हो रहे है, और जो दान दे रहे है, मुबारकबाद और धन्यवाद देते हैं। हम में से कोई सेवक ऐसा न रहे जो थोड़ा बहुत धन के द्वारा सहायता न करे। गुरू मिशन में सबका सहयोग आवश्यक है।

**दूसरी खुशखबरी** यह है कि श्रीमन गोपाल कृष्ण जी गंगानगर देव आश्रम में सेवाकारी होने के लिए पहली दिसम्बर से यहां रह रहे हैं, वह महोत्सव से पहले तो सेवाकारी हुए, महोत्सव के दिनों में भी अपने कई सुझाव देते रहे।

अब महोत्सव के बाद उन्होंने जिस तरह आश्रम की सफाई की, चीज़ों की सम्भाल की, छोटे साधन मन्दिर को साफ सुथरा करने की सेवा की है, वह बहुत सराहनीय है। अब वह लाईब्रेरी को और सुन्दर रूप देने, किताबों को सुरक्षित करने के लिए दिली भावों से काम कर रहे हैं। गुरू मिशन में सेवाकारी होना जहां उनका बहुत सौभाग्य है, वहां देव आश्रम की भी सुरक्षा है।

गोपाल जी के साथ श्रीमान रमेश सिंह जी दिली सहयोग दे रहे हैं। 2 - 3 घण्टे गोपाल जी के साथ काम करते हैं। देव आश्रम का कोना 2 सुन्दर रूप ले रहा है।

उपरोक्त सेवाकारियों को देखकर परम पूजनीय भगवान देवात्मा के कारज के विकास का विश्वास बढ़ता है। सहायकारी शक्तियां कैसे सहायता कर रही है और सेवाकारी समूह पैदा हो रहा है, यह देखकर दिल खुशी से झूम उठता है।

-मंत्री देव समाज

## सूचना

संगरूर में सत्संग 10, 11, 12 फरवरी को है। अधिक से अधिक धर्म सम्बन्धी पधारने की कृपा करें।

# धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 1
जनवरी 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना


## पावन महोत्सव 2022

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का पावन 172वां शुभ जन्म महोत्सव हर बार की तरह देव आश्रम निकट डेराबसी में चाव भाव से मनाया गया। यह पावन महोत्सव हर प्रकार से कामयाब रहा। इस बार यात्रियों की संख्या पहले से अधिक थी। मल्लेंका और केसूपुरा क्षेत्र से यात्रियों की बस आई। महोत्सव से पहले श्रीमान बलबहादुर जी ने कई क्षेत्रों का प्रचार दौरा किया। महोत्सव की तैयारी करने के लिए श्रीमान गोपाल जी पहले ही पहुंच गए थे। श्रीमान बलबहादुर जी, श्रीमान सुखदेव सिंह जी, मल्लेका और श्रीमान गौतम जी गोनियाना से 2 दिन पहले पहुँच गए थे। श्रीमति सुरजीत जी की अगवाई में इन सब ने मिलकर सारी तैयारी 7 तारीख से पहले पहले पूरी कर ली। सारी booking 1 महीना पहले ही कर ली गई थी। सजावट वालों ने हाल और सारे देव आश्रम को सुन्दर रूप दे दिया था। खाने वाली पार्टी भी संगरूर से 7 तारीख तक पहुँच गई थी। किताबों की स्टाल, दान आदि लेने का काम गौतम जी करते रहे। घंटा बजाने की ड्यूटी श्रीमान जलधर जी करते रहे। श्रीमान जलधर जी भी अपनी नौकरी के काम के बाद महोत्सव संबंधी काम में भी सेवाकारी होते रहे। पानी गरम करने का काम श्रीमान बूटा सिंह जी हर बार की तरह करते रहे। खाना खिलाने आदि का काम मल्लेका पार्टी और संगरूर के धर्म संबंधी करते रहे। सभाएं श्रीमान यशपाल भल्ला जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान गौतम जी ने करवाई और पब्लिक लैक्चर पंडित राधेश्याम जी, श्रीमती डा. शशी जैन जी और श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने दिए। महोत्सव का सारा प्रबंध श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने बहुत मेहनत से किया। श्रीमान रमेश जी और श्रीमती भजन कौर जी ने दिल से पूरा सहयोग दिया और अभिषेक जी भी सहायक होते रहे। चन्द्रगुप्त जी और उनके पोते ने भजन गाए। विशेष सभा में भजन श्रीमान पियूष भल्ला जी ने गाए।

<u>प्रवेश सभा, 7.12.2022, शाम 4.30 बजे। सभापति श्रीमान गौतम जी गोनियाना।</u> श्रीमान चन्द्रगुप्त जी और उनके पोते ने जो

बहुत अच्छा तबला बजाता है 'हमारे पूजनीय सत्गुरू जी तुम हो धन्य' वाले भजन का ज्यों ही गान किया, पावन महोत्सव प्रारम्भ हो गया। देव स्त्रोत का गान और व्याख्या की गई। सभापति जी ने श्री देवगुरू भगवान के श्री चरणों में सहाय प्रार्थना की। फिर एक भजन 'निराली शक्तियां लेकर मेरे भगवान आए हैं' का गान किया गया। फिर सभापति जी ने बताया कि हम भगवान देवात्मा के सम्बंध में महोत्सव की प्रवेश सभा कर रहे हैं। पाप सागर में डूब रही इन्सानियत को बचाने के लिए पूजनीय भगवान ने 140 साल पहले जीवन ब्रत ग्रहण किया था। जो व्यक्ति विकास क्रम को नहीं समझ सकता वो देवात्मा को नहीं समझ सकता। सभापति जी ने विकासक्रम और नेचर में विभिन्नता के नियम की व्याख्या की। फिर उन्होंने मनुष्य की महा पतनकारी अवस्था का वर्णन करते हुए एक शेर और गुलाम की घटना बताते हुए कहा कि हिंसक से हिंसक जानवर भी अपने उपकारियों को नहीं सताते पर मनुष्य हिंसक जानवरों से भी भयानक बनकर अपने उपकारियों को सताता है। नीच अनुरागी और नीच घृणाकारी मनुष्यों की ऐसी अवस्था को दूर करने के लिए नेचर ने देवात्मा को प्रकट किया। उन्होंने श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी, कनल जी, सरदार सावन सिंह जी, पं नेतराम जी आदि के जीवन परिवर्तन को बताकर भगवान देवात्मा के विशेष आविर्भाव की विशेषता को प्रकट किया। उन्होंने भगवान के महोत्सव की विशेषता का वर्णन किया। सभाओं से लाभ उठाने के नियमों की व्याख्या की। अंत में यात्रियों का स्वागत किया गया और चन्द्रगुप्त जी ने भजन गाकर यात्रियों का स्वागत किया। श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने डयुटीयों और सूचनाओं का वर्णन किया।

गौतम जी इतनी छोटी उम्र में प्रवेश सभा को बहुत उत्तमता से निभा रहे हैं और महोत्सव की तैयारियों में सहायक हो रहे हैं, हिसाब रखने, किताबों की ज़िम्मेवारी खुशी 2 करते रहे हैं, यह बिल्कुल Silent worker हैं। हम उन्हें मुबारकबाद देते है।

<u>पहली सभा, 8.12.2022, विषय : परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक संबंध। सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।</u> चन्द्रगुप्त जी ने तारणहारे गुरूदेव हमारे भजन का गान किया। देवस्त्रोत का गान और व्याख्या की गई। फिर एक भजन 'परम आवश्यक जीवनदायक मेरे भगवन का संबंध' का गान हुआ। सभापति जी ने भगवान के श्री चरणों में प्रार्थना की।

सभापति जी ने बताया कि हवा, पानी, भोजन के साथ हमारा संबंध परम आवश्यक और जीवनदायक है। हम इन सारी चीज़ों के बिना जीवित नहीं रह सकते। उसी प्रकार हमारे भीतर जो आत्मा है उसके लिए भगवान देवात्मा का संबंध परम आवश्यक और जीवनदायक है। सभापति जी ने फरमाया कि लाला जुल्ली राम जी को परम पूजनीय भगवान के थोड़े से संबंध ने ईमानदार बना दिया। मिस्त्री वधावा राम जी के

जीवन की घटना का वर्णन करते हुए सभापति जी ने फरमाया कि देवात्मा के थोड़े से संबंध ने उन्हें स्वार्थ से निकालकर परोपकारी दाता जी बना दिया। देवात्मा के संबंध ने श्रीमान राम सिंह जी को बदल दिया। श्रीमान बुध सिंह जी और राम सिंह जी जैसे अनपढ़ लोगों के आगे पढ़े लिखे विद्वान सिर झुकाने लगा दिए। यह सिर्फ देवात्मा के संबंध से हुआ है। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने कहा था कि मैंने वो सारे पाप किए हैं जो मुझे करने का अवसर मिला, पर देवात्मा के संबंध ने मुझे ऐसा बना दिया है कि मैं सवेरे चार बजे से लेकर रात दस बजे तक अपनी और दूसरों की भलाई के लिए ही समय लगाता हूँ। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी। सभा में बहुत ही शान्ति से श्रोतागण बैठे थे, कोई हिलजुल नहीं हुई।

पब्लिक लैक्चर, शाम 4.30 बजे। वक्ता : पंडित राधेश्याम जी। सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने वक्ता का परिचय करवाते हुए उनके जीवन में भगवान देवात्मा द्वारा आए हुए शुभ परिवर्तन का वर्णन किया। उनके मल्लेका क्षेत्र में प्रचार कार्य के विषय में भी बताया।

फिर माननीय वक्ता ने अपने दो विषयों को पब्लिक के सामने रखा। वक्ता ने बताया कि सारी दुनिया के सामने तीन प्रश्न हैं :- पहला प्रश्न है कि इस दुनिया को किस ने बनाया है? दूसरा प्रश्न है मनुष्य का इस विश्व में कैसे आविर्भाव हुआ? तीसरा प्रश्न है मृत्यु के बाद मनुष्य का क्या होता है। वक्ता ने वैज्ञानिक ढंग से गुरू महाराज की शिक्षा को पेश करते हुए बताया कि विश्व जड़ और शक्ति से बना है और इसको बनाने वाला कोई ईश्वर नहीं है। बल्कि विकासक्रम में इसका विकास हुआ है। दूसरे प्रश्न का उत्तर बताते हुए पंडित जी ने बताया कि मनुष्य का विकास पशु जगत से हुआ है और मनुष्य जन्म नर और नारी के विशेष संबंध से होता है। मनुष्य का लक्ष्य सच्ची मोक्ष और विकास है। मृत्यु के बाद का तीसरा प्रश्न भी भगवान की शिक्षा के अनुसार वक्ता ने परलोक और मौत की सच्चाई का उत्तर दिया। वक्ता ने बताया कि सारी दुनियां के सामने यह प्रश्न खड़े है जबकि भगवान देवात्मा ने इनका वैज्ञानिक उत्तर हमें बताया है। वक्ता ने अपने दूसरे विषय की व्याख्या करते हुए गुरू, सतगुरू और देवगुरू की व्याख्या की। पंडित जी ने बताया कि लोग नदियों, पेड़ों, पशुओं, मनुष्यों (देवी देवताओं) की पूजा करते है। उन्होंने वर्णन किया कि भौतिक, वनस्पति, पशु और मनुष्य जगत हितकर होने के साथ हानिकारक भी हैं, इसलिए पूजा के अधिकारी नहीं हैं जबकि देवात्मा सिर्फ हित और सत्य अनुरागी हैं इसलिए एक मात्र देवात्मा ही पूजा के अधिकारी हैं।

9.12.2022 :- आज महोत्सव का विशेष दिन था। सारे यात्री बहुत सवेरे उठे हुए थे। देवाश्रम में चहल पहल थी। चारों ओर 'सत्य देव की जय' और महोत्सव मुबारक हो के शब्द सुनाई दे रहे थे। नहा धोकर यात्री महोत्सव हाल के नजदीक सवेरे 6 : 15 के करीब इकट्ठे हो रहे

थे जहां श्रीमान गुरदेव राज जी अपनी पार्टी के साथ जोश के साथ भजन गा रहे थे। लगभग एक घंटा भर गुरू महाराज जी की महिमा के भजनों का गान होता रहा।

सात बजकर आठ मिनट पर सूर्य उदय का समय था। घंटा बजाते ही भगवान देवात्मा की जय के नारे गूंजने लगे। खुशी में बैंड बजने लगा। 'प्रगटे देवगुरू भगवान जीवन ज्योति देने वाले' भजन का गान धर्म संबंधियों ने जोश के साथ किया, फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने ऊंचे मेज पर खड़े होकर जोश से भरकर आज के दिन की महिमा और विशेषता का वर्णन कर गहरी शुभकामनाएं की। धर्म संबंधियों को इस विशेष दिन के लिए तैयार होने की अपील की। चार बार जय ध्वनि होते ही बैंड के तराने बजने लगे। धर्म संबंधी अपने तारणहारे गुरू के जन्म की खुशी में नाचने लगे। साथ-2 धर्म संबंधी गुरू महाराज जी की छवि के आगे फूल मालाएं भेंट करके प्रणाम करते गए। बहुत सुन्दर नज़ारा था। जो देखने से सम्बन्ध रखता था।

<u>सवेरे 9.30 बजे महा सभा। विषय : परम पूजनीय भगवान का आविर्भाव, उनका अद्वितीय लक्ष्य, उस लक्ष्य के लिए उनका अद्वितीय त्याग, तप और उत्पीड़न, निराली समाज की स्थापना सत्य धर्म की खोज, आत्माओं का कल्याण। धन और जन की अपील। सभापति : श्रीमान यशपाल जी भल्ला।</u> श्रीमान पियूश जी भल्ला ने 'धन्य हैं देवगुरू भगवान' भजन का गान किया देव स्त्रोत के गान और व्याख्या के बाद श्री सभापति जी ने सहाय प्रार्थना की, फिर 'अद्वितीय जीवन व्रत धारी, अद्वितीय महिमा है, तुम्हारी' भजन का बहुत मधुर आवाज में पियूश जी ने गान किया। सभापति जी ने फरमाया कि मनुष्य की बहुत कृपापात्र अवस्था थी। ऐसी अवस्था में नेचर ने लाखों वर्षों के विकासक्रम में भगवान देवात्मा को प्रकट किया है। श्रीमान हितैषी सिंह जी, श्रीमान कनल जी आदि उच्च आत्माओं के वर्णन से सभापति जी ने बयान शुरू किया कि वह महोत्सव पर क्या बताते थे। सभापति जी ने अपने विषय का पहला चरण भगवान के आविर्भाव से शुरू किया। फिर अपने दूसरे चरण में रुड़की कालेज में भगवान के प्रवेश, ऋषि शिवदयाल सिंह जी का विकासक्रम में भगवान को मिलना, उनका ऋषि जी द्वारा आत्मिक विकास का वर्णन, फिर अंग्रेज प्रिंसीपल का भगवान का लाहौर भेजना वहां उनके आत्मा के विकास का वर्णन किया। सभापति जी ने भगवान की पत्रिका बिरादरे हिन्द के प्रभाव और ईसाई प्रचारकों पर उनके प्रभाव का वर्णन किया। फिर उनके जीवन व्रत का वर्णन करते हुए मिस मेरी कारपेंटर, मेजर टक्कर और महात्मा बुद्ध की जीवनियों से पाई सहायता का वर्णन किया। जीवन व्रत ग्रहण और भाव प्रकाश और उसके बाद भगवान का उच्च प्रभाव लाभ करने की देववाणी का पाठ किया। सभापति जी ने सन् 1882 से भगवान की विरोधता का वर्णन किया। उन्होंने सन् 1892 के महा संकटकाल का बयान करते हुए भगवान के मृत्यु अवस्था में पहुँचने का दर्दनाक हाल पेश किया। भगवान के

जीवन व्रत, उसकी विरोधता का भजनों और देववाणियों के द्वारा जो बयान था वह दिलों को हिला देने वाला था। भगवान की सत्य धर्म शिक्षा और आत्माओं के कल्याण का बयान भी दिलों को छूने वाला था। सभा बहुत लम्बी थी पर सभा से सारे यात्री प्रभावित हो रहे थे और समय उन्हें लम्बा लग नहीं रहा था। Pindrop silence थी, मानों यही सभा महोत्सव को कामयाब बनाने के लिए काफी से ज्यादा थी। भल्ला साहिब का सभा के साथ 2 जोश बढ़ता जाता था।

फिर श्रीमान बलबहादुर जी ने धन और जन की अपील की। संगरूर सत्संग की सूचना दी। जिसके लिए धर्म संबंधियों ने अपने नाम लिखवाए। जय ध्वनि के साथ सभा समाप्त हुई।

शाम चार बजे बच्चों की सभा हुई कई बच्चों ने अपनी अच्छी तैयारी के साथ गुरू महाराज की जीवनकथाएं और घटनाएं सुनाई। मंच का संचालन श्रीमती सतिन्द्र ढिल्लों जी कर रही थी।

<u>पब्लिक लैक्चर, शाम 4.30 बजे। वक्ता : श्रीमती डॉ. शशी जैन। सभापति : डॉ. सतिन्द्र जी ढिल्लों। विषय : देव धर्म की विशेषता।</u>

सभापति जी ने वक्ता का परिचय करवाते हुए उनकी Education और देव समाजी परिवार पर लम्बे सम्बन्ध का वर्णन किया। फिर वक्ता ने अपना विषय Public के सामने रखा।

वक्ता ने बताया कि देवधर्म की विशेषता देवात्मा को लेकर है। वक्ता जी ने देवात्मा का परिचय दिया और बताया देव धर्म की विशेषता यह है कि देवधर्म वैज्ञानिक धर्म है। देव धर्म में ईश्वर का कोई स्थान नहीं है जबकि बाकी धर्म ईश्वर के अस्तित्त्व पर निर्भर हैं। देवधर्म चमत्कारों में विश्वास नहीं करता। देवधर्म में पूजा भी बाकी धर्मों से अलग है। देव धर्म में पूजा की धारणा को लेकर भी देव धर्म की बाकी धर्मों से विशेषता है। देव धर्म में जो नैतिक मूल्य हैं, देव धर्म के जो त्योहार हैं और संबंधों की शिक्षा है उसकी भी बहुत बड़ी विशेषता है। सभापति जी ने वक्ता का धन्यवाद किया।

<u>दूसरा लैक्चर, सुरजीत बराड़। विषय : देवात्मा के विकास की अद्भुत गाथा।</u> हम सभाओं में सुनते हैं कि नेचर के विकास को समझे बिना देवात्मा को समझना असम्भव है। नेचर के विकास को कुछ न कुछ सब समझते हैं कि यह सूर्यमण्डल का विकास हुआ, उसमें लाखों, करोड़ों वर्षों के विकास के बाद कैसे यह पृथ्वी बनी, इस पर पौधे, पशुओं का विकास हुआ, फिर एक विशेष पशुओं की शाखा से मनुष्य का विकास हुआ और इस विकास क्रम में मनुष्य में उन्नतशील मानसिक शक्तियों का विकास हुआ, फिर इस मानसिक शक्तियों से मनुष्य द्वारा जो विकास हुआ है और हो रहा है, उसको हम सब देख रहे हैं। लेकिन मनुष्य प्रकृति में सुख के आकर्षण पशुओं से विरासत में मिले, इसलिए उसका सारा विकास सुख को लेकर हुआ है, जिससे विकास के साथ विनाश भी जुड़ा हुआ है।

इसी विकास क्रम ने लाखों वर्षों के संग्राम में एक ऐसी सत्य, शुभ के प्रेम और झूठ

और मिथ्या से पूर्ण घृणा की विरासत देकर एक नन्हें बालक को जन्म दिया, जिसके विकास की भी एक अद्भुत गाथा है।

बचपन आम बच्चों की तरह उनका भी गुजरा, परन्तु आज्ञापालन और हित भाव की छोटी छोटी घटनाएं गुरू महाराज के जीवन में घटित हुई। उनको जिस मिथ्या से पूर्ण वातावरण में प्रतिपालित होने का मौका मिला वह उन्होंने भी ग्रहण किए। उस उमर में और उस वातावरण में यही सम्भव था।

पढ़ाई का गहरा शौक रखते हुए रुड़की इंजनीयरिंग कालिज में गए, उनका और विकास हुआ, गुरू धारण किया सत्य का सदा साथ देने का वचन लिया, कुछ जाति पाति का मिथ्या विश्वास दूर हुआ, यह विकास की एक और सीढ़ी थी।

लहौर में जाकर नौकरी की वहाँ उनके विकास के दरवाज़े खुल गए।

उसके बाद सभापति जी ने देवात्मा के विकास की गाथा बताई, कैसे ब्रह्मों समाज से जुड़े और जब ब्रह्मो में सत्य के विरुद्ध आचरण देखा, तो उनके सत्य और हित अनुराग और पाप मिथ्या के प्रति घृणा ने गवारा नहीं किया।

फिर बताया कि कैसे देव समाज की स्थापना की, देव शक्तियां दिन पर दिन विकसित हुई, कोई जादू या क़िश्मा नहीं हुआ, धीरे – 2 अनुकूल वातावरण और विरासत ने पूर्ण विकास पाया। देवशक्तियों के भीतर से जो देव ज्योति और देव तेज विकसित हुआ। देव ज्योति में आत्मा के सम्बन्ध में वह सत्य और तत्व खोजे, जो आज तक किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

इस प्रकार जैसे नेचर का विकास एक क्रम अनुसार हुआ है, उसी प्रकार परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव शक्तियों का विकास भी क्रम अनुसार हुआ। हमें यह अति अद्भुत और सुन्दर गाथा को "मुझमें देव जीवन के विकास भाग एक और दो में पढ़ने को मिल सकती है, अवश्य पढ़नी चाहिए।

10.12.2022, सुबह 9.00 बजे। सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। विषय : सेवक सेविकाओं का ग्रहण। श्रीमान गुरदेव राज जी ने महिमा विषयक भजन का गान किया। देव स्त्रोत की व्याख्या और गान के बाद प्रार्थना विषयक भजन का गान हुआ। सभापति जी ने श्रीमती नवदीप कौर जी का नाम सभा में बताकर यह फरमाया कि इनको सेविका ग्रहण किया जाएगा। उनका संक्षिप्त परिचय भी सभापति जी ने दिया। यह बीबी पोस्ट ग्रेजुएट हैं, और हमारे बहुत सेवाकारी और साधनशील साथी सेवक श्रीमान सुखदेव जी मल्लेका की पुत्रवधु हैं। उसके बाद उन्हें विजय पताका के नीचे खड़े करके प्रतिज्ञाएं करवाई गई। बहुत से जनों ने उनके गले में हार डाले और उनके सेविका बनने की खुशी में दान भी दिया।

इस सभा के बाद भाव प्रकाश की सभा हुई श्री सभापति जी ने सभाओं के विषय में संक्षिप्त व्याख्या करके धर्म संबंधियों को भाव प्रकाश करने के लिए निमंत्रित किया।

# भाव प्रकाश

संक्षिप्त में

**श्रीमान जगीर सिंह जी :-** सभाओं से बहुत लाभ हुआ। मेरा जो आत्मा बीमार था उसका यहां इलाज हुआ है। मैं नीचभावों के अधिकार से तड़प रहा हूँ मैंने महोत्सव पर आकर भी गुण नहीं देखे। मैं घमंडी न बनूं।

**श्रीमान बूटा सिंह जी :-** मुझे सम्मान के योग्य श्रीमान गुरबख्श सिंह जी के गुण दिखाई दे रहे थे। हमें समाज के स्थान पर रखा। उन्होंने मुझे माता जी को प्रणाम करना सिखाया है और सेवा करना सिखाया है।

**श्रीमान मधूसुधन जी :-** मुझे यहां आने से बहुत लाभ हुआ है जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। सभा से अधिक सेवा से लाभ हुआ है। मैं चाहता हूँ मैं सेवा करके लाभ उठाऊं। धर्म संबंधियों से मिलकर बहुत खुशी मिली है।

**श्रीमान भूषण सिंह जी जीरा :-** पहली बार यहां की बातें सुनकर लाभ हुआ है। उन्होंने एक भजन सुनाकर अपना भाव प्रकाश किया।

**श्रीमति दविन्द्र कौर जी :-** माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी से पिता की तरह प्यार मिला है। मुझे यहां आकर ही कुछ दिखाई दिया है। मैं मिशन में सेवाकारी होना चाहती हूँ। यहां के धर्म संबंधियों से बहुत प्यार मिला है। माता जी बीमार हो गए थे और डर था कि कहीं महोत्सव से न रह जावें। पर माता जी मौत के मुंह से निकल आई, और हम यहां आ गए। सभापति जी ने उनके कई गुण बताए।

**श्रीमान जंसविन्द सिंह जी मल्लेका :-** मेरे भाव थे कि मिशन में सेवाकारी हो सकता पर मेरा Visa लग गया। अब जितना समय है मेरे से सेवा ले लें।

**श्रीमान जलधर जी :-** मैं पहले उतनी सेवा नहीं कर सका जितनी पहले करता था पर फिर भी थोड़ी बहुत देव समाज की किताबें पढ़ने का भाव महोत्सव यह जागा है। पहले मैं पिता जी को परोपकार के लिए 5000/- रुपए देता था पर पिता जी के परलोक जाने के बाद बंद हो गया। अब मैं फिर पैसे परोपकार में लगाया करूंगा।

**श्रीमान गोपाल कृष्ण जी :-** उन्होंने गाकर सुनाया :-

बरबादियों की अजब दासता हूँ
है अपना जो दुश्मन मैं वो इन्सान हूँ

मैं अपने विषय में यही अनुभव करता हूँ। सेवा करने की यहीं से प्रेरणा मिली है। मैं सेवा करके किसी पर एहसान नहीं कर रहा। गुरू महाराज मुझे मेरी मैल दिखाते हैं। माता पिता जी के बारे में अपने भावों का प्रकाश किया। मैं अपनी धर्मपत्नी जी से मुझे समाज में लगने की प्रार्थना करता हूँ।

**श्रीमान रमेश जी :-** उन्होंने महोत्सव की

तैयारी के लिए मैडम बराड़ जी का धन्यवाद किया। गोपाल जी का समाज में काम करने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने कविता सुनाई।

**भजन कौर जी :-** मैं श्रीमती बराड़ जी का धन्यवाद करती हूँ। मैं अपने भाई सुखदेव जी को बार बार याद करती हूँ कि वो जल्दी विदेश से आ जावे।

**श्रीमती सतिन्द्र कौर जी ढिल्लों :-** मुझ में बहुत कमियां हैं महोत्सव में वो नजर आई हैं। Time की मैं पाबन्द नहीं हूँ। मैं अब किताबें पढ़ा करूंगी। मैं बहन जी और बाई जी की कृपा से यहां हूँ। देव समाजी माता पिता के यहां जन्म लेकर आगे नहीं बढ़ी। सभाओं से बहुत लाभ हुआ है। कालेज के संबंध में परिशोध करूंगी। ईर्ष्या को मारना है। भल्ला जी की सभा में मुझे गुरू महाराज के त्याग नज़र आए है। किताबें अपने परिवारिक जनों को दूंगी। सबका धन्यवाद किया।

- - - -

सत्यदेव की जय,

सम्मान के साथ सभी साथी सेवकों को सत्यदेव की जय और मैंने यहाँ आकर सब साथी सेवकों से बहुत ही सेवायें पाई हैं सबसे पहले बताना चाहती हूं कि इतने सालों से आते हुए हो गए पर अब की बार हमें पहली बार विश्राम करने के लिए बिस्तर आदि सब तैयार मिले, नहाने का गर्म पानी आदि भी। और मैं आगे से अपने नमक खाने पर नियन्त्रण करने की कोशिश करूंगी। और मैं अपने पति के आगे शायद कुछ ज्यादा बोल जाती हूँ उस पर नियन्त्रण की कोशिश करूंगी। उनसे क्षमापार्थी हूँ।

आपकी साथी सेवक

वन्दना गर्ग

सत्यदेव की जय,

सभी बड़ों को प्रणाम,

मैं अपने पिता जी के बारे में बताना चाहती हूँ मेरे पिता जी की मैं बहुत शुक्रगुजार हूँ और रहूँगी मेरे बीमार होने पर मेरे पिता जी और मम्मी के योगदान को नहीं भूल सकती। वे अपने प्यार के साथ-साथ हम बहिनों को Motivate भी करते हैं। मैं पिता के लिए कुछ करना चाहती हूँ क्योंकि घर में कोई सदस्य के बीमार होने पर पिता जी तो हमें मोटरसाइकिल पर ले जाते हैं पर हम नहीं ले जा सकते क्योंकि मैं चाहती हूँ कि मैं भी मोटरसाईकल सीख कर उनकी सेवा कर सकूँ। मुझे यहाँ आने पर गुरू जी के बहुत प्रभाव मिले और हर तरह से respect बढ़ गई है।

आपकी साथी सेवक

सुमनदीप

पिता का नाम : श्रीमान जसकरण सिंह जी

गाँव : मल्लेका

**श्रीमान बलदेव जी मल्लेका :-** बहन सुरजीत जी में मुझे अपनी बुआ जी नज़र आती रही। सभाओं से लाभ हुआ है।

**श्रीमान गुरदेव राज जी :-** आप सारे सोचते

होंगे कि मैं बहुत अच्छा आदमी हूँ पर मैं अच्छा नहीं हूँ। मैं गुरू से बहुत कम जुड़ पाया हूँ। मैं माता जी को प्रणाम करना कई दिनों से बंद कर रखा है अब प्रणाम किया करूंगा। दूसरी प्रतिज्ञा है कि मैं देव समाज के ग्रंथ पढ़ा करूंगा। मल्लेका में हर इतवार की सभा में शामिल हुआ करूंगा।

**श्रीमान खेम चन्द जी :-** हाल सजाने वालों का, खाने वालों का धन्यवाद करता हूँ। बहुत सेवाएं पाई हैं। सभाओं से बहुत लाभ हुआ है।

**श्रीमती सुरजीत बराड़ जी :-** उन्होनें कहा कि मैं अपने पिता जी को याद करती रहीं कि वो कठिन से कठिन हालात में भी प्रबंध विषयक काम करते थे। उनसे मैं महोत्सव की कामयाबी के लिए प्रार्थना करती रही। आगे से हम महोत्सव पर हार खुद बनाएं ताकि हम और अधिक सेवाकारी हो सकें। उन्होंने सेवा करने वालों का धन्यवाद किया। उन्होंने मल्लेका निवासी धर्म संबंधियों को इतवार को सभा में शामिल होने के लिए प्रेरणा की। त्याग व्रत का भी जिक्र किया। सभा कराने वालों, भजन गाने वालों का धन्यवाद किया। गुरू महाराज की Books पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

**श्रीमान हेमन्त जी धमीजा (पदमपुर) :-** श्रीमान जी वा मेरे सब धर्म सम्बन्धियों को प्रणाम, सत्यदेव की जय। माननीय भल्ला साहिब जी ने प्रेरणा दी थी कि आप हर रोज़ पुस्तकों का पाठ किया करो, आपको बहुत लाभ होगा। आपको भगवान की ज्योति मिलेगी। यह मैंने 2021 के महोत्सव से कुछ न कुछ शुरू कर रखा है। मुझे बहुत लाभ मिला है। इस महोत्सव में शामिल होकर बहुत प्रभावित हूँ। बहुत प्रभावशाली वातावरण था। सभी के लिए दिल से शुभ कामना करता हूँ। हम गुरू के दर से जुड़े रहें, गुरू की कृपा हम पर बनी रहे।

सभा के अंत में डेराबस्सी के MLA कुलजीत सिंह जी रंधावा साहिब पधार चुके थे। उन्हें श्रीमान बलबहादुर जी ने देव समाज से परिचित करवाया, और धर्म संबंधियों ने उनका हार डालकर स्वागत किया। उन्होंने थोड़े शब्दों में अपने बहुत सुन्दर भावों का प्रकाश किया। वह सारे वातावरण से बहुत प्रभावित हुए और यह कहा कि राजनीति के दूषित वातावरण से निकलकर यहाँ आकर अजीब शान्ति का आभास हुआ है। मैं इसकी बहुत प्रशंसा करता हूँ और मेरे लिए जो भी सेवा हो मैं करने के लिए तैयार हूँ।

अंत में देव आरती का गान करके और जय ध्वनि के साथ यह पावन पर्व सम्पन्न हुआ। भगवान देवात्मा और नेचर की सहायकारी शक्तियों की बड़ी सहायता से यह महोत्सव हर प्रकार से कामयाब रहा।

इस महोत्सव पर सब धर्म सम्बन्धियों में बहुत जोश था, विशेषकर मल्लेका, केसूपुरा की पार्टी विशेष उत्साह में थी। वहां पर गुरू मिशन का काम और बढ़ेगा, ऐसी आशा है।

# मेरी माँ

माँ कभी नहीं बदलती, जिंदगी भर मुसीबतों के दु:ख के महासागर लांगते - लांगते थक गई हो, तो भी बच्चों की एक पुकार पर दौड़ के आती है। जीवन के आख़िरी पड़ाव पर भी उसकी सारी प्रार्थनाएं, सारी दुआएं अपने बच्चों के लिए ही होती हैं।

मां चाहे किसी देश व जाति की हो, उसकी ममता भरी भावनाएं एक जैसी ही होती हैं, रात को जागना, अपने बच्चों की थोड़ी सी तकलीफ पर बेहाल हो जाना, उनको हर मुसीबत से बचाने के लिए समर्पित रहना, अपनी बिमारी, दु:ख के समय भी वक्त से टकरा जाती है माँ। बेशक कोई और वक्त बदलने पर बदल जाएं, परन्तु मां का ममता भरा दिल कभी नहीं बदलता।

जो बच्चे कृतघ्र बन कर अपनी जन्मदाता, पालन कर्ता, संघर्षमय जीवन जीकर बच्चों को सुख प्रदान करने वाली माता को भूल जाते हैं, सुध नहीं लेते या वृद्ध आश्रम में छोड़ देते हैं, माँ सदा उनके भी सुख की दुआएं मांगती नज़र आती है। बच्चे जब माँ को दूर कर देते हैं, तो वह उसे प्यार से छू नहीं सकती, तो भी उनके मेजों पर बच्चों की तस्वीरें होंगी, वह उन्हें निकालकर बार बार देखेगी और दूसरों के सामने बच्चों को निर्दोष बताएगी। एक - एक मां को यदि पता हो कि बच्चे ने शाम को आना है, तो भी सुबह से वह दस बार दरवाज़े में जाकर देखेगी। हर आहट उसे अपने बच्चे के आने की आहट का एहसास अनुभव करवाएगी।

माँ का रूप शब्दों में ब्यान हो ही नहीं सकता, यह तो एक एहसास है, जो कुछ न कुछ अनुभव किया जाता है। मां का रूप तो ब्रह्माण्ड से भी बड़ा है।

मैं जब अपनी मां के रूप को याद करती हूँ, ऐसा लगता है कि वह दुनिया की सबसे अच्छी मां है। एक कोमल कन्या जो अपने पिता और उनके भाईयों के बीच इकलौती बच्ची, जिसे लाड प्यार मिलने की कोई सीमा नहीं रही। मेरी नानी जी ने इस लाड प्यार के बावजूद उनमें घर के कामों, सिलाई और कढ़ाई की शिक्षा दी। उनकी कशीदाकारी को देखकर हैरानी होती है, जो उन्होंने 18 वर्ष की उम्र में पूरी कर ली थी। एक समय में "बाग" के नाम से खदद्र रंगकर उस पर कढ़ाई की जाती थी। ऐसे उन्होंने बहुत से बाग बनाए। मेरी माता जी का एक बाग बनाया हुआ था, जिसकी एक भी जगह कढ़ाई से वंचित नहीं थी और वह उन्होंने मुझे शादी में उपहार में दिया था। 30 - 35 साल बाद मेरा बेटा मेरे से ले गया जिसे बहुत ट्रीट करवाकर फ्रेम करवाया, उन्होंने हमें ग्रंटी दी कि यह 80 वर्ष तक खराब नहीं होगा। वह 9 - 10 फीट लम्बा और 6 - 7 फीट चौड़े फ्रेम के साथ अमरीका में उसके घर में सुशोभित है और जो भी आता है उन्हें दिखाकर वह अपनी नानी पर गर्व अनुभव करता है। उन्होंने यह गुण हमारे भीतर भी पैदा किए, अपने बच्चे कैसे सम्भालें, उनके खाने पीने का ध्यान कैसे रखें, यह सब रहनुमाई हमें उनसे मरने तक मिलती रही। अनपढ़ हो कर वह बहुत सी पढ़ी लिखी औरतों से अधिक समझ रखती थी। कुछ समय पहले मुझे अपनी भुआ जी के घर जाने का मौका मिला, वह भी बूढ़ी थी, पर उनके रोते हुए आंसु नहीं सूख रहे थे कि मेरी 'माँ' जैसी भाभी थी, उनके न होने से मैं अनाथ

अनुभव करती हूँ। अपने बच्चों के लिए तो वह त्याग की मूर्ति थी ही, अपनी ननदों के लिए, अपने और सुसराल के सम्बन्धियों में भी उनका अलग स्थान था। मेरे ताया जी की बेटी उनके पास ही फार्म में ब्याही हुई थी, एक दिन वह भी रो रोकर बता रही थी कि चाची जी ने मेरे दुःख सुख में मेरी माँ से बढ़ कर भूमिका निभाई है।

ऐसी माँ अपने बच्चों के लिए क्या हो सकती है, उसका अनुमान लगाया जा सकता है। उन्होंने हम चारों बहनों को जिस प्रकार कमाने खाने और अपने ससुराल में जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाया, वह एक मिसाल है। बहुत से विरोधी हालात होते हुए भी वह हमारे हित के लिए मैदान में डट जाती थी।

वह कोमलता और स्नेह से पली बढ़ी, रात के अन्धेरे में डरने वाली बच्ची, अपने बच्चों के लिए रात-रात भर खेतों में लालटेन लेकर मज़दूरों के पीछे घूमती, शेरों की दहाड़ों से भी निडर होकर अपने बीमार पति को सम्भालती, इस प्रकार बूढ़ी हो गई, बिमारियों का शिकार बन गई, परन्तु हमें सुखमय जीवन जीने के योग्य बना गई।

आज उनकी छत्र छाया न पाकर वह कोना खाली लगता है, जहां दुआओं, आर्शीवादों की बौछार होती थी। जहां हमारी, हमारे बच्चों की उन्नति की ख़बर उनकी आखों में चमक ले आती थी और किस उत्साह से सब मिलने वालों के पास उसका खुशी से ब्यान करती थी। हमारे घर में जाने पर बीमार पड़े होकर भी उन्हें यह फिक़र था कि हमने क्या खाया है। हमें खिलाकर उन्हें अजब सन्तुष्टि मिलती थी। बड़ी उमर में भी माँ जब तक जिंदा है, आपको बच्चे होने का एहसास बना रहता है।

माँ, नेचर के ओर से आए प्रत्येक दुःख को चुनौती के रूप में स्वीकार कर लेती है। मेरे माता जी की जिंदगी में भी बहुत चुनौतियां आईं, उनका न केवल उन्होंने हौसले से सामना किया बल्कि अपने बच्चों पर आंच नहीं आने दी। 'मां' होना ही चुनौती भरा जीवन है परन्तु मां ही है जो सब बुरे हालातों पर अपनी सन्तान के लिए विजय प्राप्त कर सकती है, चाहे उसका अपना अस्तित्व फ़नाह ही हो जाए। एक कहानी पढ़ी थी कि नेचर में माँ को गढ़ा जा रहा था, तो एक अप्सरा ने पूछा कि यह क्या बना रहे हो, जवाब मिला कि "मां को गढ़ा जा रहा है" अप्सरा की जिज्ञासा थी कि "मां कैसी बनानी है?" उत्तर मिला, जिसकी कोख से मानवता जन्में, जिनकी कोख में सृष्टि समा जाए, जिसका स्पर्श बड़ी से बड़ी चोट को सहलाकर ठीक कर दे, जिसका दुलार बड़े से बड़े सदमें से उबार दे, जिसके दो हाथ सबको दिखें, पर हों कई, ताकि जीवन संवारने का उनका कर्तव्य बिना बाधा पूरा हो सके, जिसके मन में भी आँखें हों, जिनसे वह दूर बैठी अपनी सन्तान के दुःख को देख सके। जो बीमार होने पर भी दस लोगों वाले परिवार के लिए हंस कर भोजन बना दे, नाज़ुक हो पर हर मुश्किल को हरा सकने का दम रखे, जिसके आंचल तले सृष्टि को सुरक्षा मिले, जिसके नेत्रों में अपने बच्चों के लिए स्नेह भरा जल हो और उनके शत्रुओं के लिए ज्वाला, जिसके दर्शन मात्र से मन कृत-कृत हो।

वास्तव मां का एक ऐसा व्यक्तित्व गढ़ा गया है जिसे सबको नमन करना है। आज के दिन फिर मां से कह रही हूँ, उनका आर्शीवाद जो वह सदा देती रही हैं, वह आर्शीवाद का हाथ सदा मेरे सिर पर रहे।

एक उपकृत बेटी

**सुरजीत बराड़**

# मुझे मेरी मां मिल गई।

बहुत ही सन्मान के योग्य श्रीमान जी,

सत्य देव जी जय,

श्रीमान जी, मेरे परिवार में और मेरे हृदय में आपके लिए बहुत सम्मान है, मेरे लिए आप बहुत महान रूप रखते हो। मैंने आपकी सभाओं से बहुत लाभ प्राप्त किए हैं, उनका ब्यान करने की मेरी योग्यता नहीं, पर उसका असर सबके सामने है। मैं यह छुपा ही नहीं सकती कि इस घर को स्वर्ग का रूप देना, आपकी मेहरबानी है।

आप जो हृदयों को साफ करने का संघर्ष करते रहे हैं, उसकी मेहरबानी मैं आज आपको बता रही हूँ।

श्रीमान जी, कल्याण सत्संग हुआ, मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे मेरी मां मिल गई। मेरा दिल अन्दर से यह कर रहा था कि मैं ऊंचे ऊंचे पुकारूं कि मुझे मेरी मां मिल गई, मुझे मेरी मां मिल गई। मां के उपकार और उसका असली रूप आज नज़र आया है। मेरी देवी मां पता नहीं कितने दुःख उठाती रही, परन्तु हम पर दुःख का परछावां भी नहीं पड़ने दिया। सारा सारा दिन काम करती कि तुम अपनी पढ़ाई में ध्यान दो, सारी उमर काम ही करना है, मेरे सिर पर आराम करो और खुश रहो। शायद मां के लिए घर का काम ही उनका धर्म था। कभी हमने उन्हें किसी की बुराई करते नहीं सुना, किसी के साथ नाराज होते नहीं सुना, शायद उन्हें हमारी सेवा से छुट्टी ही नहीं मिलती थी। बहुत ही भोले स्वभाव की थी।

श्रीमान जी, यदि मैं कल्याण सत्संग पर न आती, दिल को हिलाने वाली सभाएं न सुनती शायद मैं मां को सदा के लिए खो बैठती।

आपसे अच्छे भाव लेकर मैं मां को मिलने चली गई, जब मैं गई तो मां को दर्द हो रहा था, फिर भी अपनी 4 महीने की पोती को गोद में उठाए बैठी थी। मां को मिलकर जब मैंने पूछा तो बताया कि मेरे बहुत दर्द हो रहा है। परिवार ने मुझे भरोसा दिलवाया के हम मुक्तसर अच्छे डाक्टर को दिखा कर आए हैं, दवाई से धीरे-धीरे आराम आएगा, आगे से बेहतर भी है, परन्तु इन्हें ज्यादा वहम है।

मैंने मां को पूछा कि हम आपको लेकर चलते हैं, शाम के 7 बजे थे, यदि आप कहें तो सुबह चलेंगे। हमारे आराम को ध्यान में रखते हुए उन्होंने कहा कि अब तो कुछ आराम है, सुबह ही चलेंगे।

अगले दिन डाक्टर के पास गए, तो उन्होंने बताया कि अपैंडैक्स फटने को हो गया था, पहले ही आप लेट हो, यदि थोड़ा और लेट हो जाते, तो मां को सदा के लिए गंवा बैठते। उन्होंने जल्दी ऑपरेशन करके मां को बचा लिया।

मेरे भाईयों ने आपका लाख लाख शुक्र किया कि जिनकी सभाएं सुनकर उनकी बहन उनके पास आई, हमने तो यही कहते रहना था कि मां वहम कर रही है, और मां ने घर पर ही मर जाना था। वह तुम्हारा धन्यवाद ही करते रहे। मां कह रही थी, मेरी बेटी ने मुझे बचा लिया, मैं उस गुरू महाराज का धन्यवाद करती नहीं थकती थी कि जिन्होंने मुझे मां की मदद के लिए भेजा।

श्रीमान जी मैं आपका कर्ज़ा सारी उमर न दे सकूंगी, जिनके संग्राम से मेरी मां बच गई।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी का मैं धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने इतनी तकलीफें उठाकर हमारे खाने का प्रबन्ध किया। सारे परिवार को भाग भाग कर सेवा करते देख सम्मान पैदा होता था।

भरपूर कौर (मोगा)

# गुरु ने माता पिता दिखा दिए

मैं समझता हूं कि परम पूजनीय परम भगवान देवात्मा के चरणों में आकर ही मुझे असल होश आई है। गुरु की शरण में आने के बाद भी मेरी जिन्दगी में कई प्रकार की कठिनाईयां आईं, परन्तु गुरु महाराज की शिक्षा के अनुसार मैंने उनका हल ढूंढा। यदि मैं इस दर पर न आता तो मेरी मौत और घर की बर्बादी होनी थी। अब मुझे जिन्दगी में कोई ऐसी मुश्किल दिखाई नहीं देती कि जिसका मैं हल नहीं ढूंढ सकता। यह सब मेरे गुरु की कृपा से है। मैं अपने सब सम्बन्धियों को कहता हूं कि यदि स्वर्ग में रहना है, तो गुरु महाराज के चरणों से जुड़ जाओ।

सब उपकारी सामने आने से पहले मुझे उस महान व्यक्तित्व श्रद्धा के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी का उपकार नज़र आता है कि जिन्होंने 300 किलोमीटर लगातार जा जाकर मेरे साथ सम्पर्क रखा और मुझे दूसरे उपकारी नज़र आने लग गए हैं। मैंने पहले अमृत छका, दसवीं कलास में कलेरां वाले संतों के पास गया, फिर राधा स्वामी बना। परन्तु परम पूजनीय भगवान देवात्मा के साथ जुड़कर मेरे भाग्य खुल गए। मुझे जो भी कठिनाईयां आती हैं, वह गुरु की रोशनी में हल हो जाती हैं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण में आने से पहले मैं अपने माता पिता वा अन्य सम्बन्धियों को जानता ज़रूर था परन्तु वास्तव में पहचानता नहीं था। मेरे सब सम्बंध सुख को लेकर थे। मैं अपनी बहनों के पास जाता ज़रूर था, भाई के पास भी जाता था, परन्तु उन्हें मिलकर जो सुख वा खुशी अब मिलती है, कभी नहीं मिलती थी।

अब माता पिता का उपकारी रूप नज़र आया है। मैं अपने बहन भाईयों में सबसे छोटा हूं। पहली बात तो यह कि बेटे की चाह में मेरे माता पिता ने पहले तीन बेटियों को जन्म दिया और मेरे जन्म पर उन्होंने इन्तहा खुशी मनाई। इतने बड़े परिवार को सम्भालना कोई आसान काम नहीं। मेरे माता पिता बहुत अच्छे नैतिक असूल रखते थे, इसीलिए ही आज सारा परिवार सुखी है।

मेरे माता पिता ने सारी जिन्दगी एक दूसरे की सलाह से जिन्दगी चलाई। मैंने उन्हें कभी लड़ते झगड़ते नहीं देखा। मेरे पिता का कोई भाई नहीं था। गांव में रहते थे। 13 वर्ष के थे कि उनके पिता का देहान्त हो गया। उसके बाद उन्होंने 3 मेरी भुआ और 8 हम बहन भाईयों की शादियां कीं। मेरे पिता जी के ताया के बेटे डाकुओं से मिल गए थे, उन्होंने हमारे घर में चोरी भी करवाई और मेरे पिता जी को मरवाने की भी कोशिशें की। मेरे पिता जी बहुत ईमानदार थे। मेरे जन्म से पहले ही उन्होंने मांस शराब छोड़ दिया था। मेरी बहनों की शादी में उन्होंने किसी को मांस शराब नहीं दिया। हमारे दोनों भाईयों की शादी में उन्होंने मांस शराब का प्रयोग नहीं किया। गांव में बीमार होने पर लोगों की बहुत सेवा करते थे। गांव में उनका बहुत सम्मान था। वह पंचायत के मैम्बर भी रहे। गांव में स्कूल बनाने वा गुरुद्वारे बनाने के लिए दान इकट्ठा किया। उनके इन गुणों के कारण हम सब सुखी हैं।

गांव में कई प्रकार की दुश्मनी और डर के कारण उन्होंने गांव की ज़मीन बेचकर शहर में

ली। सब बहन भाईयों को हमारी योग्यताओं के अनुसार शिक्षा दिलवाई। नई ज़मीन को आबाद करने में वह बहुत कष्टों में से गुज़रे, यहां तक आर्थिक कठिनाईयां आई कि मेरे भाई को मैडीकल की एक लाईन में दाखिला मिल गया, परन्तु पिता जी खर्च देने में असमर्थ थे, उन्हें नहीं भेज सके। मैं छटी क्लास में पढ़ता था, मुझे याद है कि मेरे माता जी रोते रहते थे कि मेरे परिवार का क्या बनेगा। यह मेरे माता पिता की परीक्षा की घड़ी थी। परन्तु इन हालातों में भी उन्होंने कभी फटा पुराना कपड़ा नहीं पहनने दिया। कभी टूटे जूते नहीं पहनने दिए। हम बहन भाईयों को और खाने, पीने ओढ़ने पहनने में कभी कोई कमी नहीं आने दी।

जब इन हालातों में मेरा बड़ा भाई बालिग हो गया तो गांव की ज़मीन का मुकद्मा करके वह वापिस ले सकता था, जबकि जितने में सौदा हुआ था, उसकी कीमत तीन गुणा हो चुकी थी। हमारे रिश्तेदारों ने भी ऐसा करने की सलाह दी परन्तु मेरे पिता जी ऐसा करने से साफ इंकार कर दिया और अपनी ईमानदारी पर आंच नहीं आने दी। इसी कारण आज हम खुश हैं।

जब मैंने दसवीं पास की और मेरे से बड़ी बहन की शादी एक साल पहले हो चुकी थी वह बेहद नेक स्वभाव की थी, परन्तु पति ने मजबूर किया कि हम गांव छोड़कर शहर रहना चाहते हैं, उसके लिए 5000 रुपये और अपने छोटे भाई को लेकर आओ। मेरे भाई ने बहुत विरोधता की कि उसकी पढ़ाई खराब मत करो। मेरी बहन ने भी कहा कि यदि आप इसको नहीं भेज सकते तो मैं सारी उम्र गांव में ही रह लूंगी, परन्तु पिता जी वायदा कर चुके थे, उन्होंने मुझे भी भेजा और 5000 रूपये ब्याज पर लेकर दिए। सारी उम्र मेरे पिता जी अपने प्रण के पक्के रहे। इस कारण मेरे माता पिता को मेरे पास लुधियाना रहना पड़ा। जिन मुसीबतों से मेरे माता पिता गुज़रे हैं शायद ही कोई माता पिता गुज़रे हों। हमारी शिक्षा और उन्नति के लिए उनको अपना आप बेचने में भी गरेज़ नहीं था। उनकी इन कुर्बानियों के कारण ही हमारी सब बहनें अपने घरों में सुखी हैं, हम दोनों भाईयों के पास बहुत धन और जायदाद हैं, हम सब खुश हैं। अब तो यही कामना है कि मैं ऐसी संगत से जुड़ा रहूं और ऐसे कुर्बानी के पुतले माता पिता की अधिक से अधिक सेवा कर सकूं।

**(एक सेवक)**

# बच्चों के व्यक्तित्व का विकास कैसे करें?

माता पिता के लिए बच्चे खुशी का स्रोत हैं। जैसे फूलों से बगीचे महकते हैं, वैसे ही बच्चों की किलकारियाँ घर के वातावरण को महकाती हैं। बेहद तकलीफ दुख, असहनीय पीड़ा से गुज़रकर जब मां बच्चे को जन्म देती है तो उस असीम खुशी को मां ही समझ सकती है और महसूस कर सकती है। पिता का दर्जा पाकर पुरुष भी फूला नहीं समाता। बच्चों की परवरिश में माता पिता अपना सब कुछ, सारे सुख आराम खुशी खुशी न्यौछावर कर देते हैं और बच्चे का विकास देखकर, उसकी तोतली बातें सुनकर उनकी खुशी सातवें आसमान पर होती है। आज की सुख सुविधाओं की दुनियां में प्रत्येक माता पिता अपनी हैसीयत से भी बढ़कर अपने बच्चों

को सुख सुविधाएं प्रदान करना चाहते हैं। अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं। आधुनिक खिलौने लाकर देते हैं। उन्हें घुमाने फिराने के प्रोग्राम बनाते हैं। इस सब के साथ अकसर माता पिता उनके शारीरिक और बौद्धिक पक्ष को विकसित करने के ही पक्ष में रहते हैं, लेकिन एक संतुलन और व्यवस्थित जीवनयापन करने के लिए उन्हें किस प्रकार पालना है, उसकी ओर बहुत कम ध्यान दे पाते हैं। उनको सही जीवन मूल्य सिखाने में अकसर वह असफल हो जाते हैं, जिससे वह दुनयवी लिहाज़ से तो कई बार बहुत सफल भी हो जाते हैं, परन्तु वह अच्छे इंसान नहीं बन पाते, यहां तक कि माता पिता के प्रति भी स्वार्थी बन जाते हैं।

एक नौजवान ने बताया कि बचपन में उसने कुछ ऐसी गल्तियां की हैं जो नैतिकता के विरुद्ध थी परन्तु मेरे माता पिता ने उसे एक बार भी नहीं कहा कि यह तुमने गल्ती की है, या इसमें क्या गल्ती है। इस प्रकार उसे सारी उमर गलत और ठीक का एहसास ही नहीं हुआ। नौजवानी के जोश में कई बार माता पिता की बातों को बच्चे अनसुना कर देते हैं। उनको आलोचक समझते हैं, परन्तु गल्त और ठीक का एहसास दिलाते दिलाते वह अपनी उम्र में आकर उन बातों का लाभ उठाते हैं।

(1) सर्वप्रथम माता पिता को अधिक लाड प्यार वा अधिक सख्त व्यवहार से परहेज़ करना चाहिए। एक ओर उनके साथ मित्रवत व्यवहार होना, उन्हें भरपूर प्यार देना और दूसरी ओर उन्हें अनुशासित रखने के लिए प्यार से समझाना और आवश्यकता पड़ने पर सख्त व्यवहार भी करना आवश्यक है। यह संतुलन बच्चे को व्यवस्थित व्यवहार सिखाता है।

(2) एक ओर बच्चे के गल्त काम की तर्क सहित आलोचना और दूसरी और उसकी छोटी छोटी उपलब्धियों की प्रशंसा बच्चे को अच्छे और बुरे का विवेक देती है।

(3) बच्चों की उपलब्धियों पर एक ओर उन्हें शाबाश देना आवश्यक है, दूसरी और उन्हें यह समझाने की आवश्यकता है कि यह उपलब्धि किस किस की मेहरबानी से है। कहां से उसे योग्यता मिली, किसने उस योग्यता को बढ़ाया। इससे बच्चे के घमंड बढ़ने पर रोक लगती है।

(4) बच्चों को खाने पीने में भी अनुशासित रखने की आवश्यकता है। आज के युग में इतना **Junkfood** खाने को है कि यदि बच्चों को खाने के विषय में सतर्क न किया जाए, तो एक ओर स्वास्थ्य सम्बंधी परेशानियां उठानी पड़ती हैं और दूसरी ओर कई बार खा खाकर बच्चे इतने मोटे हो जाते हैं कि सारी उम्र उसके दुख भोगते हैं। लाड प्यार का कोई तरीका होता है। गल्त खान पान का आदी बनाकर आप प्यार नहीं शत्रुता का व्यवहार करते हैं।

(5) बच्चों की बोलचाल पर भी अनुशासन की आवश्यकता है। बड़ों के साथ कैसा व्यवहार करना है। घर में यदि कोई बीमार है तो उसके प्रति संवेदनशील बनना है। अपने दादा दादी, नाना नानी का कैसे सत्कार वा सेवा करनी है, यह जीवन मूल्य यदि पैदा नहीं कर सकते,

तो वह दिन दूर नहीं जब आपके बच्चे आपके लिए ही मुसीबत बन जाएंगे।

(6) बच्चों को समय पर सदोपयोग सिखाना अति आवश्यक है। पढ़ाई के समय यदि आप शुरू से ही बच्चे को टी.वी. देखने या अन्य फजूल कार्यक्रमों से नहीं रोकेंगे तो ज्यों ज्यों बड़े होंगे, उनकी वह आदत नहीं छूटेगी और अपने कैरीयर में पिछड़ जाएंगे।

बच्चों को जन्म देना और उनके शरीर की पालना करना और उन्हें शिक्षा देना भी बहुत कठिन काम है। परन्तु सबसे कठिन काम उन्हें नेक और सफल इंसान बनाना है। ऐसे बच्चे बनें कि जो अपने माता पिता, अपने बड़ों, अपने अध्यापकों के लिए सम्मान प्रदर्शन करें, वह दूसरों के लिए कुछ कर गुज़रने की भावना रखते हों ताकि वह सोसाईटी के लिए बोझ नहीं, बल्कि उनका उपयोगी अंग बन सकें।

**सुरजीत बराड़**

# देव स्तोत्र

देव जीवन धारकम् { देव धर्म प्रवर्तकम् / सत्यधर्म प्रवर्तकम्

सर्वहित सम्पादकम्, देवगुरूं नमाम्यहम् ।1

देव ज्योति प्रकाशकम! { आत्मरूप प्रदर्शकम्; / आत्मरोग प्रदर्शकम्; / आत्मपात प्रदर्शकम्; / आत्मक्षेम प्रदर्शकम्;

आत्म बोध प्रबोधकम् / आत्म ज्ञान प्रबोधकम् / सत्य धर्म प्रबोधकम् / देव धर्म प्रबोधकम्

देवगुरूं नमाम्यहम्। 2

देवतेज प्रकाशकम् { नीच राग विकाशकम्; / नीच घृणा विनाशकम्

सत्य मोक्ष प्रदायकम्, देवगुरू नमाम्यहम्। 3

देव तेजः प्रकाशकम् { उच्च भावोत्पादकम्; / उच्च रागोत्पादकम्;

उच्च रूप विकासकम्, देवगुरूं नमाम्यहम्। 4

**भावार्थ :**

हे देव! तुम देव जीवन धारी हो, तुम सत्य अथवा देव धर्म के प्रवर्तक हो, तुम सकल हितों के सम्पादक हो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ।।1।।

हे देव! तुम देव ज्योति के प्रकाशक हो, तुम अपनी देवज्योति के द्वारा मनुष्यात्मा के अन्धकार को दूर करके उसे उसकी गठन, उसके रोगों , उसके पतन, और उसकी कुशल को दिखाते हो; और इस प्रकार उस में आत्म ज्ञान उत्पन्न करके उसे सत्य धर्म वा देव धर्म का ज्ञान प्रदान करते हो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ।।2।।

हे देव! तुम देव तेज के प्रकाशक हो, तुम अपने देव तेज के द्वारा मनुष्यात्मा के नीच अनुरागों और उसकी नीच घृणाओं को नष्ट करते हो, इसलिए तुम मनुष्यात्मा के सत्य मोक्ष दाता हो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ।।3।।

हे देव! तुम देव तेज के प्रकाशक हो, तुम अपने देव तेज के द्वारा मनुष्यात्मा में उच्च भावों और उच्च अनुरागों को उत्पन्न करते हो, और उस में उच्च रूप वा उच्च जीवन का विकास करते हो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ।।4।।

# देवगुरु आरती

जय सत्य औं शुभ अनुरागी, जय देव रूप धारी;
सत्य औं शुभ के हेतु, एक अतुल त्यागी।
जय 2 देव गुरू ।।1।।

जय मिथ्या और अशुभ संग, अतुल युद्ध कर्ता;
उन्हें पराजित करके, सत्य की जय कर्ता
शुभ की जय कर्ता
जय 2 देव गुरू ।।2।।

जय देव ज्योति से पूरण, जय देव ज्योति दाता;
आत्म-तिमिर के हर्ता, आत्म-ज्ञान दाता।
जय 2 देव गुरू ।।3।।

जय देव तेज से पूरण, जय देव तेज दाता;
नीच गति के हर्ता, सत्य मोक्ष दाता।
जय 2 देव गुरू ।।4।।

जय देव तेज संचारक, जय पाप मैल हर्ता;
हृदय निर्मल कर्ता, पवित्र रूप दाता।
जय 2 देव गुरू ।।5।।

जय उच्च भाव उत्पादक, जय उच्च गति दाता;
पूरण आत्म-विकासक, आत्मिक बल दाता।
जय 2 देव गुरू ।।6।।

जय सकल सत्य के पोषक, जय सब मिथ्या हर्ता;
सकल हितों के साथी, समुचित सुख दाता।
जय 2 देव गुरू ।।7।।

जय जीवन रस संचारक, जय अमृत दाता;
आत्म-पतन के नाशक, जय जीवन दाता।
जय 2 देव गुरू ।।8।।

जय एक उपास्य सभों के, जय आत्म-तत्व ज्ञाता;
सत्य धर्म के शिक्षक, पूरण हित कर्ता।
जय 2 देव गुरू ।।9।।

जय अतुल दान के दाता, जय देव रूप धारी;
दान तुम्हारा पाकर, धन्य हों नर नारी।
जय 2 देव गुरू ।।10।।

## सूचना

*धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :* -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154

***देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।***

**DEV SAMAJ (G)**
**Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh**
**Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414**

***Published on 5th of the month***

*Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023*
*Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88*

# देव समाज के पाठ और विचार के साधनों की तालिका (वर्ष 2023 ई०)

| | | |
|---|---|---|
| 1 | माता पिता सन्तान के सम्बन्ध में | 10 जनवरी 2023 |
| 2 | भाई बहनों के सम्बन्ध में | 26 जनवरी 2023 |
| 3 | देव समाज के सम्बन्ध में (देव समाज उत्सव) | 15, 16, 17 फरवरी 2023 |
| 4 | पति पत्नी के सम्बन्ध में | 8 मार्च 2023(होली) |
| 5 | उदभिद जगत् के सम्बन्ध में | 22 मार्च 2023 |
| 6 | भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में | 7 अप्रैल 2023 |
| 7 | स्वंशीय जनों के सम्बन्ध में | 5 मई 2023 |
| 8 | स्वदेश के सम्बन्ध में | 31 मई 2023 |
| 9 | साथी सेवकों के सम्बन्ध में (सेवक उत्सव) | 2, 3, 4 जुलाई 2023 |
| 10 | सत्य धर्म बोध उत्सव (स्वास्तित्व के संबंध में) | 28, 29, 30 अगस्त 2023(रक्षा बंधन) |
| 11 | पशु जगत् के सम्बन्ध में | 23 सितम्बर 2023(राधा अष्टमी) |
| 12 | परलोक के सम्बन्ध में | 14 अक्तूबर 2023(अंतिम श्राद्ध) |
| 13 | स्वजाति के सम्बन्ध में | 23 अक्तूबर 2023 (दशहरा) |
| 14 | भौतिक जगत् के सम्बन्ध में | 12 नवम्बर 2023 (दीपावली) |
| 15 | मनुष्य मात्र के सम्बनध में | 27 नवम्बर 2023 (गंगा स्नान) |
| 16 | भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में | 25, 26, 27, 28 दिसम्बर 2023 |

**नोट :–** 1) परम पूजनीय भगवान देवात्मा के संबंध में आरम्भिक दिन 27 नवम्बर 2023 ई. दिन शनिवार है।
2) परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म दिन 27 दिसम्बर 2023 ई दिन सोमवार है।
3) साधनों को जो जो विशेष दिन किसी हिन्दू त्यौहार के दिन नियत किए गए है, वह साधन विविध स्थानों पर जहाँ तक संभव हो उसी दिन में मनाए जावें कि जिस दिन वह त्यौहार मनाया जाए।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री– **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक*
*"धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर*
*म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

**Book Posts**